क्योंकि रात को आजकल बहुत खराबियाँ हैं। बाबा का सभी सेन्टर्स को ये मन(मना) है, तो एक तो कभी भी कोई भी जवान बालकी या कुमारी या दो कुमारियाँ या माता और भले कुमारी हों, तो भी रात को बाहर कम निकलें। (किसी भाई ने कहा– बाबा, रात को गोप ही आते हैं उस समय में) गोप ही जाते हैं भले। बाकी उनको आने का और सवेरे में भी जब कोई आते हैं; क्योंकि सवेरे का समय अच्छा होता है, शुभ मुहूर्त। उसमें मनुष्य की जो वृत्ति होती है ना, वो शैतानी नहीं होती है। जैसे–2 रात होती जाती है तैसे–2 मनुष्य की वृत्ति शैतानी होती है; क्योंकि रात विकार के लिए आती है ना। अमृतवेले शैतानी नहीं होती है। तो इसलिए बच्चों को भी शिक्षा दी जाती है कि रात को कहाँ भी अकेले, दो बच्चियाँ आपस में भी नहीं। नहीं, मेल ज़रूर होना चाहिए या झुण्ड होना चाहिए। आजकल बड़ी खबरदारी। बाबा अखबारें तो पढ़ते रहते हैं। सो भी एक पढ़ते हैं, नहीं तो बाबा अखबारें दो/तीन पढ़ें तो ठीक है। वहाँ जो कुछ भी ऐसी–2 बातें हैं तो बच्चों को सावधानी कर दें। और कौन सावधानी करेंगे बच्चों को! जो अखबार पढ़ते हैं सो अपने घर में कुछ सावधानी देंगे। अभी सब बच्चों को सावधानी कौन देवे? तो बाबा के तो बच्चे बहुत हैं ना। तो बाबा देखते हैं..रात को तो कभी भी भूले–चूके भी नहीं जाना चाहिए एकेला(अकेला) में, एकान्त में; क्योंकि मैंने कल देखा अखबार में दिल्ली में और दिल्ली में और भी बदमाशी बहुत है। चोरी–चकारी वगैरह, किसको भी नहीं छोड़ते हैं। कितना भी कोई ऑफिसर हो। तो बहुत गंद है। तो इसलिए बच्चों को खबरदार रहना चाहिए। सेंटर में भी अकेली बच्ची/कुमारी कभी भी न रहे। उसमें भी कोई मजबूत (...), बुड्ढी भी ऐसे नहीं जो अपनी साँस में उठ न सके। नहीं, मजबूत होनी चाहिए। हर एक सेन्टर में भी दो/तीन रहनी चाहिए। बहुत जाँच करनी है कि कोई बदमाश तो नहीं है। प्रदर्शनी में तुमने देखा ना, प्रदर्शनी में आते हैं तो अनुभव लिखाते हैं ना। तो एक छोकरे ने लिख दिया कि ब्रह्माकुमारियाँ तो चोर हैं। ये सभी जो प्रदर्शनियाँ का प्रपंच है, ये सभी ठगने के लिए; इसलिए ये चोर हैं। ये जो वो लिखते हैं उसमें (किसी ने कहा–रिमार्क) रिमार्क्स में। ...अभी आजकल के स्टूडेण्ट्स तो देखो कैसे हैं! सबसे जास्ती गंदे भी आजकल के स्टूडेण्ट्स हैं। छोकरियों के पिछाड़ी भी आजकल के सभी स्टूडेण्ट्स फिरते हैं और गवर्मेण्ट समझती है– स्टूडेण्ट्स तो हमारा ब्लड है नया, वो तो भारत को बहुत ही नए ब्लड में लाएँगे, समझा ना और उनका ब्लड ठहकता है विकार के पिछाड़ी, ये उनको मालूम नहीं है। इसलिए बच्चों को खबरदार किया जाता है अच्छी तरह से। बहुत गंदगी है एकदम..। विकार के पिछाड़ी, शैतानी के पिछाड़ी तो बहुत खराब है एकदम। बाबा खेती वालों को भी कहते हैं कि कन्याएँ जो भी जिसकी हों, उनको भी खेती में भी कभी भी अकेला नहीं भेज देना चाहिए, आस–पास में, दूर कहाँ भी; नहीं तो बदमाशी बहुत है। बहुत गंदगी है दुनिया में। अभी ड्रामा के प्लैन अनुसार देखो बाप खुद कहते रहते हैं– बच्चे, बड़ी गंदगी है। मैं आया तो हूँ ये गंदगी को निकालने के लिए; परन्तु टाइम जो पड़ा हुआ है। बाबा भी कहते हैं कि ऐसी गंदगी जिनको अभी खलास करें; परन्तु नहीं, टाइम पड़ा हुआ है। ये ड्रामा के वश है। हम कुछ कर नहीं सकते हैं। हमारा तो टाइम है, जब ड्रामा पूरा होगा, तब फिर ये सभी काम खलास हो जाएँगे, जयजयकार होगी। अभी तो बच्ची बस हायहायकार है। इसमें भी कुमारियों के पिछाड़ी तो मुसीबत है। कोई भी सुहेनी कोई देखते हैं, तो दिन में तो फिर भी सम्भाल है, रात में तो बहुत खराब होते हैं; क्योंकि रात में बहुत बाइस्कोप वगैरह में जाते हैं ना। बाबा कहते बाइस्कोप में जाना, जहन्नुम में जाना है;..क्योंकि है ही तो आसुरी गवर्मेण्ट, है ना। उनको ये नाटक,

बाइस्कोप, गाना, बजाना अरे बहुत अच्छा लगता है। ये चित्र वगैरह, ये चित्रशाला जो निकालते हैं ना, बस चित्र कोई ने ऐसे बनाया ना– येऽऽऽयेऽऽऽ, ऐसे–2 कोई ने चित्र बनाया ना,..बस खुश होते हैं बहुत। कृष्ण का भी डांस वगैरह जो वैसा है, ऐसे आँगड़ियाँ, ऐसे–2 माइयाँ–छोकरियाँ भी अभी सीखती हैं ना। आँगड़ियों मुट्ठियों का चलते रहते हैं, पता नहीं क्या सीखती हैं ऐसे–ऐसे। (किसी ने कुछ कहा) ये समझते हैं पार्वती डांस है, ये फलाना डांस है। है...सब शैतानी। गंद बहुत लगा हुआ है। समझते हैं ना बच्चे, ...जब तलक ये ज्ञान मनुष्य को नहीं है रचता और रचना का, मनुष्य कोई काम का नहीं है। देखो, जब ये ज्ञान मनुष्य को आता है तो सतयुग बन जाता है, देवता बन जाते हैं। तो अभी असुर हैं ना बच्ची। असुर बहुत कड़ा नाम है। जनावर भी कुछ (...), असुर तो बहुत खराब नाम है। तो बच्चों को सेण्टर्स में भी ये खबरदारी रखनी चाहिए कि रात को कोई भी बच्ची नहीं आवे। बाबा खुद मना करते हैं कि कभी भी कोई भी कुमारी रात को कोई भी बुड्ढी–बूढ़े के साथ भी नहीं आवे। कोई दरकार नहीं है। आओ तो दिन में आवे। सो भी बाहर निकलना आजकल बड़ा खबरदार रह...। ...रस्ते चलते–2 ये मोटर खड़ी की, ये पकड़ा, ये भागा। पर दिन में फिर भी रड़ी–वार्ता होते हैं ना, कोई हर्जा नहीं है। कोई भी अकेला इतनी जगह में, एकान्त में कभी भी कोई नहीं जाना चाहिए। ये रजौरी–वजौरी दूर होते हैं, कितने दूर से आते हैं। आजकल बाबा अलाउ भी नहीं करें एकदम...। अभी दुनिया के लिए तो राक्षसों, राक्षस ही राक्षस हैं। तुम्हारे लिए तो बड़ी खबरदारी चाहिए ना बच्ची। कहाँ तुम देवताएँ, कहाँ वो असुर! अभी असुर और देवताएँ तो इकट्ठे तो नहीं होते हैं ना वास्तव में और तुम देवता बन रहे हो; क्योंकि तुम जानते हो कि हम (...), वो तो...लिखा है भागवत में– भई, ये है दैवी सम्प्रदाय, ये आसुरी सम्प्रदाय; पर तुम जानते हो– दैवी सम्प्रदाय तो सतयुग में होती है। यहाँ ब्राह्मण सम्प्रदाय है। ब्राह्मण सम्प्रदाय का कोई भी वर्णन नहीं है उस गीता में। ब्रह्मा द्वारा स्थापना का वर्णन भले है। राज(...) रूद्र ज्ञान यज्ञ भी है। यज्ञ भी(में) ब्राह्मण ज़रूर चाहिए; परन्तु शास्त्रों में बिल्कुल ही कुछ भी नहीं है ऐसे समझो। शास्त्रों ने और ही नुकसान कर दिया। पर ये किसको बतावें; क्योंकि भक्तिमार्ग का है ना ये सभी राज़। तो ये जो अपनी स्थापना भी होती है, बच्ची! ये तो बच्चों को समझना है ज़रूर कि अभी देखो आज, कल एक सेकेण्ड पास्ट में या 5 मिनट पास्ट में, जो कुछ सारी सृष्टि में कल्प पहले हुआ था, आज सो ही हो गया। सेकेण्ड–2 जो कुछ होता है सो होता जा रहे हैं; क्योंकि ये ज्ञान कोई के भी, ये बच्चियाँ हैं ना, हमारी बच्चियाँ नहीं हैं, उनमें भी ये ड्रामा चल रहा है, हम साक्षी हो करके देखते हैं दुनिया के। तो हम साक्षी अलग होकर देखते हैं ना, जैसे सारी दुनिया के साक्षी हो करके। तो बाप भी कहते हैं–मैं भी साक्षी हो करके देखता हूँ और फिर कर्म भी करता हूँ; पर मैं साक्षी हो करके देखता हूँ। देखते हुए जैसे कि नहीं देखते।..हम जानते हैं कि ये सभी, ये बहुत कचरा है। इस कचरे को अभी देखने की भी दिल नहीं होती है। कुछ किसकी बात सुनने की भी दिल नहीं होती है। किससे बात करने की भी दिल नहीं होती है। ये भी आते हैं सब ले करके, तो कितने आते हैं, बकवाद भी करके जाते हैं, क्या–2 करके जाते हैं। बताया ना उसने, देखो क्या लिख दिया। अभी उन छोकरों को कौन कोई कहे और छोकरों से लिखाना नहीं चाहिए, ऐसे–2 छोकरों से। हाँ, कॉलेज में जा करके इनको ये प्रोजेक्टर के ऊपर समझाना या भले प्रदर्शनी पर समझाया। पर ज़रूर उनका भी वो प्रिन्सीपल वगैरह हो, ठीक है। नहीं तो छोकरे भी छिट्टे होते हैं, प्रिन्सीपल–विन्सीपल की भी पगड़ी उतारने में देरी नहीं करते हैं। ये बात मत पूछो, ये दुनिया ऐसी है। बच्चे तो बहुत हैं– बाबा, अभी कभी(कब) विनाश होगा तो

चले अपने घर। भई नहीं, ठहरो, अभी तो बाबा के साथ हो ना। ये तुम्हारा जीवन बहुत अच्छा है। वो क्या कहेंगे, तुम तो यहाँ सेवा कर रहे हो ना फिर भी। अच्छा! मंसा भी सेवा तो कर रहे हो ना। बुद्धियोग तत्व में लगाकर रहते हो, तो भी सेवा कर रहे हो; क्योंकि इस योगबल से तुम सब तत्वों को, इस दुनिया की वायुमण्डल को शुद्ध कर रहे हो। सिर्फ इस योग से; क्योंकि योग है प्रिन्सीपल और ये योग ही बच्चे बहुत भूलते हैं। बस योग भूलते हैं और कोई–न–कोई गफ़लत हो जाती है, कोई–न–कोई पाप हो जाते हैं, कुछ–न–कुछ नुकसान कर देते हैं। वो है ना हातिमताई का भी किस्सा एक। बहुतों ने तो नहीं पढ़ा होगा; परन्तु मुख में मुलहरा डालते थे तो माया गुम हो जाती थी; मुलहरा नहीं डालते थे तो माया ही माया हो जाती थी। हैं यहाँ की सभी बातें। अल्लाह अवलदीन का खेल– वो ठगा करते हैं, कारून का खजाना निकल आते हैं। वो भी यहाँ का खेल है। खुदा दोस्त बादशाह का खेल दिखलाते हैं, वो भी यहाँ का। खेल भी बहुत हैं जो यहाँ से निकले हुए हैं। बाकी तो वाहियात सब, सब झूठी–झूठी। खेल जो सच्चा है सो तो तुम प्रैक्टिकल में पार्ट बजाय रहे हो। अच्छा, पौने दस बज गया। आज बहुत अनुभव। भले समझें कि नहीं आ सकते हैं सेन्टर में। भले नहीं आओ, कोई हर्जा नहीं है; क्योंकि तुमको सात रोज़ का जो कोर्स मिलता है ना, वो ऐसा है सात रोज़ का कोर्स, जो भले भी चले जाएँ विलायत में, कोई हर्जा नहीं है...; क्योंकि विचार–सागर–मंथन करने से आपे ही ज्ञान भी इमर्ज हो सकता है, आपे ही प्वॉइंट्स भी निकलती हैं। बहुत बच्चों की प्वॉइंट्स नई निकलती हैं जो बाबा भी नहीं निकालते हैं, विचार–सागर–मंथन करने से। फिर भी सात रोज़ का जो कोर्स करते हैं ना, उनको ये ज्ञान सारा बैठ जाता है अच्छे–अच्छों को। बाप को याद करना है, चक्कर को समझाना है। बाकी क्या समझाना है! मनुष्य ये करते हैं, भक्ति में ये करते हैं। अच्छा, वो तो करते हैं, उसको क्या समझाने का है! मूल बात, बिल्कुल फिकरात, बहुत फिकरात कौन–सी लगी हुई है? मुझे तो सतोप्रधान ज़रूर बनना है। बाबा कहते हैं कि बच्चे, मुझे याद करो, सतोप्रधान ज़रूर बनना है। तो सतोप्रधान बन करके अपनी सतोप्रधान दुनिया का मालिक बन जाएँगे। अभी सतोप्रधान के साथ 84 का चक्कर भी याद आता है। यह है तथ्य। जैसे बाप कहते हैं ना–मैं वेदों, ग्रंथों वगैरहों का सार समझाता हूँ, तैसे बाप कहते हैं कि जो मैं इतना तुमको समझाता हूँ, उनका मूल सार यह एक है–मन्मनाभव मद्याजीभव। मुझे याद करो और वर्से को याद करो और कोई भी विकर्म न करो। कोई भी पाप (...), उसमें भी 'विकर्म' अक्षर है ही विकार के ऊपर। विकार में मत जाओ। नगन नहीं हो बस। इसलिए बाबा समझाते हैं कि ऐसे भी नहीं कि भाई–बहन हैं; इसलिए कुछ साथ। नहीं–2, भाई–बहन तो वो हिसाब समझाया जाता है कि तुम सभी ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हो; परन्तु वो भी तो, गृहस्थ व्यवहार का भी तो संबंध, बाबा कहते हैं ना– गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल के समान पवित्र रहो। तो ये युक्ति रचाई है कि (...); क्योंकि ब्राह्मण हो तो भाई–बहन हो गए, विकार में तो नहीं जाएँगे ना। मुश्किलात बिल्कुल वो है, योगबल से अपन को उससे बचाना और याद करना। बाकी क्रोध थोड़ा–बहुत करते हैं, उनको कोई इतना नहीं उठाया जाता है और झगड़ा होना नहीं चाहिए; क्योंकि प्यार में फिर झगड़ा नहीं होता है। कोई झगड़ा करे तो खुद बैठ करके मुस्कुराना चाहिए। स्त्री बहुत बिगड़ती है तो इस पुरुष का काम है– जा करके उनको फूल डालें। बोलो–तुम क्रोध करती हो, मैं तुझे फूल डालता हूँ, तुम ठण्डी हो जाएगी। पुरुष क्रोध करते हैं तो जा करके ठण्डा गुलाब का जल या कुछ जा करके डाल देना। हाँ शांति,शांति,शांति– ऐसे–2 हँसी से बैठ करके शांत कराय देना चाहिए। क्रोध, झगड़ा

वगैरह, वो बाबा कहते हैं– अगर कोई क्रोध या ऐसी गंद करते हैं, तो मेरी निंदा कराते हैं। फिर इस निंदा के कारण वो ऊँच पद नहीं पाय सकते हैं। .... वो कायदे अनुसार धर्माऊ निकालते व्यापारी लोग, जो पगार मिलते हैं– दो पैसा रुपये, एक पैसा रुपये। कोई बहुत अच्छा दानी है, एक रुपया, एक आना दानी निकालते हैं। जो व्यापारी लोग होते हैं, कोई भी व्यापार वाले, जिनको जैसा धंधा होता है तो एक पैसा या दो पैसा धर्माऊ निकालते हैं। तो वो क्यों निकालते हैं? भई, पाप तो होता ही है। तो वो धर्माऊ निकालते हैं, फिर दूसरे जन्म में अल्पकाल मिलते हैं। यहाँ बाबा है डायरेक्ट। उनको फिर वही बोलते हैं– वही है भले निकालो धर्माऊ तो तुम्हारा 21 जन्म का वर्सा हो जाएगा। देखो, आगाखाँ है ना खोजों का। उनका सब जो भी है, अभी करोड़े हैं। उन सबका बाँधा हुआ है। मैं समझता हूँ एक रुपया तो सबका बाँधा हुआ है। मास निकालना, वो इकट्ठा होते ही रहते हैं। पीछे जब बहुत इकट्ठा होते हैं तभी उनको चाँदी में वजन कराकर देते हैं, सोने में वजन कराकर दिया, हीरों में वजन कराकर दिया। इन बच्चों को मालूम नहीं है। लिखा है? सुना है? आगाखाँ को उनके फॉलोअर्स, ये जो मैमन होते हैं, खोजे/मैमन ये सभी, वो हीरे एक तरफ में और वो दूसरे तरफ। बताओ कितने हीरे आए और कहाँ से लाए होंगे हीरे? तो बाबा को मालूम है कि जो हीरे के व्यापारी हैं, वो लिया नहीं उनसे, नहीं, फिर उनको वो वजन कर–करके उतना पैसा फिर उनको दे दिया। हीरा क्या करेंगे इतना? ... मोटा है बहुत, मैं समझता हूँ दो मण होगा इसके बाप में। अभी नहीं, जो इसका बाप था, वो मोटा था। दो मण बेशक हुआ होगा, हीरे का दो मण। अभी हीरे का दो मण होवे तो अनगिनत धन हो जावे। उस समय में तो सस्ते थे, जिस समय में हीरे में उनको वजन किया था और कभी कोई को हीरे में वजन नहीं किया है। इन्होंने अपने गुरू को किया है और गुरू है कैसा– गंदा... वगैरह, पता नहीं क्या है एकदम। मैम लोग से तो शादी करते हैं। तो आजकल अंधाधुंध श्रद्धा लगी पड़ी है एकदम। अंधश्रद्धा उसको कहा जाता है। (म्युज़िक बजा)

देखो, ये बाबा को तो देखते हो कि जवाहरी था। ठीक है ना! स्त्री भी थी, बच्चे भी थे, बच्ची भी थी, कुमारी बच्ची भी थी। तो बाबा ने क्या किया? ...मुझे तो सरेण्डर करना है सब बाबा के आगे। चलो, सब जो भी कुछ पैसे हैं, सो इस धंधे में लगाने हैं। चलो धंधे में लगाने हैं तो जो स्त्री–बच्चे होंगे, वो भी तो पलेंगे तो सही ना। अच्छा, तो सब कुछ लगाय दिया, अभी भूख तो नहीं मरते हैं ना कोई। भूख तो नहीं मर सकते हैं ना, जिसने अपना दे दिया। तो बाबा को ऐसे तो नहीं, कोई नहीं था। बाबा को बच्चे थे और कुँआरे थे; बच्ची थी, कुमारी थी। तो कोई तो बिचारा कहे ना–मुझे इनकी शादी करनी, फलाना करना, मैंने बोला–मैं नहीं, मैं तो सरेण्डर कर देता हूँ बस बाबा के हाथ में। उनको खाना है, मेरे पास बैठ करके खावें।.. कुमारी को भी बोल दिया– तुमको रहना है मेरे पास रहो, शादी करना है तो बोल दो; परन्तु छोटी थी, अभी तलक वो कुमारी ही है। समझा ना! सो कुमारी है, बाबा के पास नहीं; क्योंकि ज्ञान में नहीं आती है। जाओ, माई के पास जाकर रहो। तो क्या, बाबा देखो, कोई भी नहीं ऐसे कर सकते हैं! जिसके पास लाख है, 50 हज़ार है, तो सब कोई कर सकते हैं। चलो, ये हम सर्विस में दे देते हैं, रोटी तो मिलेंगी ही और हम सर्विस पर लग जाते हैं अच्छी तरह से। (अधूरी मुरली)